जुलाई 2020

₹ 20

समाजवादी बुलेटिन

बाईस में बाईसाइकिल

सदन से सड़क तक
समाजवादी तेवर
20

अखिलेश जी का दिया लैपटाप पाकर
मेधावी गदगद
36

R.N.I. No. 68832/97

किसान अन्नदाता हैं और उनके हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता मिलनी चाहिए। जब तक खेती की उन्नति नहीं होगी, गांवों का विकास नहीं होगा। गांवों के विकास के बगैर हमारे देश का विकास नहीं होगा।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी

समाजवादी बुलेटिन
जुलाई 2020
वर्ष 21 | संख्या 9

प्रिय पाठकों,

समाजवादी बुलेटिन का यह नया अंक बदले हुए रंग-रूप और कलेवर में आपके हाथों में है। इसमें समाचार के साथ विचार का संतुलन बनाये रखते हुए आपके लिए पठनीय सामग्री को हर पन्ने पर समेटा गया है। हम निरंतर ऐसी ही सामग्री लेकर आयेंगे। आशा है आपको बुलेटिन का यह नया रूप पसंद आयेगा। आपकी प्रतिक्रिया की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक
प्रोफेसर रामगोपाल यादव
☎ 0522 - 2235454
samajwadibulletin19@gmail.com
bulletinsamajwadi@gmail.com
Mob:- 9598909095
/samajwadiparty

समाजवादी पार्टी के लिए
19, विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित
आस्था प्रिंटर्स, गोमती नगर, लखनऊ से मुद्रित

R.N.I. No. 68832/97

अंदर

यादों में रहेंगे एसआरएस स्मृति शेष 04

08 कवर स्टोरी **बाईस में बाईसाइकिल**

सदन से सड़क तक समाजवादी तेवर 20

भारतीय जनता पार्टी सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ समाजवादी पार्टी ने सदन से सड़क तक मुखर विरोध को और तेज कर दिया है। चाहे विधानमंडल का सत्र हो या धरना-प्रदर्शन, लोकतांत्रिक तरीके से विरोध के हरेक तरीके को आजमाते हुए उत्तर प्रदेश के समाजवादी लगातार जनता से जुड़े मुद्दे उठा रहे हैं।

अखिलेश जी का दिया लैपटाप पाकर मेधावी गदगद 36

यादों में रहेंगे एसआरएस

समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता, पार्टी के कार्यालय प्रभारी एवं एमएलसी श्री एसआरएस यादव का 8 सितंबर 2020 को निधन हो गया। उनके निधन से पूरे प्रदेश में समाजवादियों के बीच शोक की लहर व्याप्त हो गई। उनके सम्मान में लखनऊ स्थित पार्टी के प्रदेश कार्यालय व नई दिल्ली में पार्टी के केन्द्रीय कार्यालय का झंडा आधा झुका दिया गया।

पार्टी मुख्यालय, लखनऊ में 8 सितंबर को आयोजित शोक सभा में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश ने श्री एसआरएस यादव के चित्र पर माल्यार्पण के बाद दो मिनट मौन रखकर श्रद्धांजलि दी।

उन्होंने कहा कि श्री एसआरएस यादव के कोरोना संक्रमण से निधन पर हम सब स्तब्ध हैं। प्रदेश ने अपना एक समर्पित समाजवादी खो दिया है।

श्री एसआरएस यादव की अंत्येष्टि में प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल ने समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव की ओर से श्री यादव के पार्थिव शरीर पर श्वेत पुष्पचक्र अर्पित किया। प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल ने भी पुष्पचक्र के साथ श्रद्धांजलि दी।

समाजवादी पार्टी के संरक्षक व संस्थापक श्री मुलायम सिंह यादव जब 1989 में पहली बार मुख्यमंत्री बने थे तब उन्होंने श्री एसआरएस यादव को अपना विशेष कार्याधिकारी बनाया था। वे पार्टी के राष्ट्रीय सचिव भी थे। संगठन में उनकी जबर्दस्त पकड़ थी। उनके निधन से पार्टी को अपूरणीय क्षति हुई है।

श्री मुलायम सिंह यादव एवं पार्टी के राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव प्रो. रामगोपाल यादव ने भी दिवंगत सहयोगी को भावभीनी श्रद्धांजलि दी। श्री मुलायम सिंह यादव ने अपने शोक संदेश में कहा कि पुराने सहयोगी एसआरएस यादव का निधन मेरी निजी क्षति है। वे 1989 में सहकारी बैंक की सेवा से रिटायर होने के बाद मुझसे जुड़ गए थे एवं अजीवन पार्टी के काम में लगे रहे। प्रो. रामगोपाल यादव ने शोक संदेश में कहा कि उनके निधन से पार्टी को अपूरणीय क्षति हुई है।

9 सितंबर को लखनऊ सहित प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों में समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों ने श्रद्धांजलि सभा का आयोजन कर श्री एसआरएस यादव को श्रद्धासुमन अर्पित किए। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने पार्टी मुख्यालय, लखनऊ में श्रद्धांजलि सभा में स्वर्गीय एसआरएस यादव के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। दिवंगत समाजवादी नेता को श्रद्धांजलि देने के लिए बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता एकत्र हुए थे।

खांटी समाजवादी थे जमुना प्रसाद बोस

प्रखर समाजवादी नेता, स्वतंत्रता सेनानी तथा लोकतंत्र रक्षक सेनानी श्री जमुना प्रसाद बोस के निधन पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि श्री बोस समाजवादी मूल्यों के प्रति आजीवन समर्पित रहे। समाजवादी आंदोलन के इतिहास और भविष्य में अनकी कर्मठता, सादगी और ईमानदारी याद रखी जाएगी।

95 वर्षीय श्री बोस आजाद हिंद फौज में भी रहे थे और डा लोहिया के परम अनुयायी थे। 7 सितंबर को लखनऊ में इलाज के दौरान उनका निधन हो गया।

श्री अखिलेश यादव ने पार्टी कार्यालय में आयोजित शोकसभा में पूर्व मंत्री व प्रखर समाजवादी नेता श्री जमुना प्रसाद बोस को श्रद्धासुमन अर्पित किए। उन्होंने स्वर्गीय जमुना प्रसाद बोस के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा श्री यादव के निधन से पार्टी और समाजवादी आंदोलन को अपूरणीय

सीएन सिंह को श्रद्धासुमन

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने प्रतापगढ़ के पूर्व सांसद श्री सीएन सिंह के निधन पर गहरा शोक जताते हुए दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की है। श्री सीएन सिंह का राममनोहर लोहिया अस्पताल, लखनऊ में इलाज चल रहा था। वे प्रतापगढ़ के मछलीशहर क्षेत्र से पूर्व सांसद एवं विधायक रहे। 4 सितंबर को अस्पताल में उनका निधन हो गया।

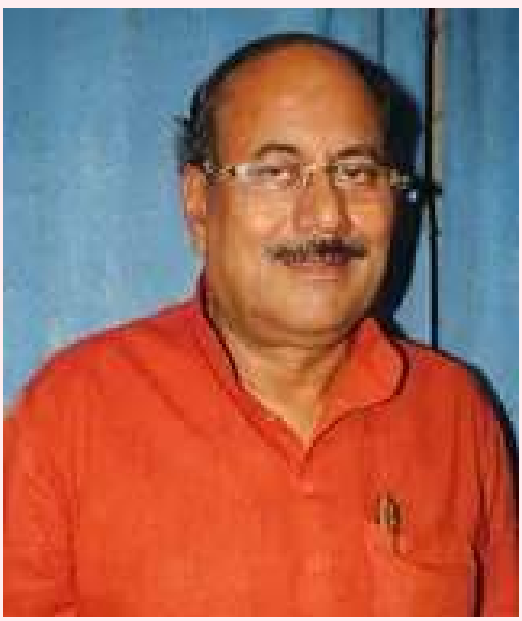

अलविदा
प्रणव बाबू

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने पूर्व राष्ट्रपति और वरिष्ठ नेता श्री प्रणव मुखर्जी के निधन पर गहरा शोक जताते हुए दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की है। उन्होंने श्री मुखर्जी के संतप्त परिवार के प्रति संवदेना व्यक्त की है।

श्री प्रणव मुखर्जी भारत रत्न से सम्मानित केन्द्र सरकार में रक्षा, विदेश तथा वित्त मंत्री रहे थे।देश की सक्रिय राजनीति में वे 50 वर्षों तक सक्रिय रहे। वे कई दिनों से कोमा में थे। 31 अगस्त 2020 को उनका 84 वर्ष की उम्र में दिल्ली के सैनिक अस्पताल में निधन हो गया।

सपा संरक्षक श्री मुलायम सिंह यादव ने अपने शोक संदेश में कहा कि प्रणव दा प्रखर सांसद, कुशल वक्ता एवं प्रशासक थे। उनसे मेरे निकट एवं मित्रवत संबंध थे। उनका निधन मेरी निजी क्षति है।

बाईस में बाईसाइकिल

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने 9 अगस्त 2020 को जनता के नाम 'अगस्त क्रांति की समाजवादी दिशा-बाइस में बाइसिकल' पत्र को डिजिटली जारी किया। उन्होंने इसकी पीडीएफ फाइल सर्वप्रथम समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव एवं सांसद प्रो रामगोपाल यादव फिर सांसद श्रीमती जया बच्चन को भेजी। श्री अखिलेश यादव ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान 9 अगस्त 1942 को गांधी जी के आह्वान पर अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत के अवसर पर बापू द्वारा दिए गए करो या मरो के मंत्र के हवाले से कहा कि उन्होंने हर हिन्दुस्तानी से कहा था कि वह अपने को आजाद समझे। हरेक को अपना नेता बनकर अपना कार्यक्रम बनाकर संग्राम को चलाना होगा। उसी तरह सन् 2022 में परिवर्तन तंत्र को बचाने के सघन अभियान में एकजुट होकर खुद से ही हर समाजवादी कार्यकर्ता को पहल करनी होगी। उन्हें 2022 के लिए अपनी तैयारियों में कोई कसर नहीं रखते हुए निष्ठा के साथ अनवरत सक्रिय रहना होगा।

सम्मानित भाइयों, बहनों और नौजवान साथियों,

9 अगस्त 1942 का दिन 1857 की क्रांति के बाद ब्रिटिशराज से भारत के मुक्ति संघर्ष का ऐतिहासिक दिन है। स्वतंत्रता आंदोलन की यह अंतिम और निर्णायक लड़ाई थी, जिसने ब्रिटिश सत्ता की जड़ें हिला दी थीं। महात्मा गांधी के नेतृत्व में 'भारत छोड़ो आंदोलन' अंग्रेजों को भारत छोड़कर जाने का अंतिम अल्टीमेटम भी था।

8 अगस्त 1942 को रात में 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास हुआ। गांधी जी ने इस अवसर पर ऐतिहासिक आह्वान किया- "करो या मरोः या तो स्वाधीनता प्राप्त कर लो या मर मिटो।" उन्होंने कहा- "मैं अंग्रेजों को चेतावनी देता हूं, या तो खुद ही भारत का शासन भारतीयों के हाथों में सौंपकर यहां से चले जाओ, अन्यथा तुम्हें संपूर्ण भारतीय राष्ट्र की उमड़ती हुई शक्ति का सामना करना पड़ेगा।"

महात्मा गांधी ने समाचार पत्रों, नरेशों, विद्यार्थियों, शिक्षकों, सरकारी कर्मचारियों और अन्य सभी का आवाहन करते हुए कहाः "अबकी जो लड़ाई छिड़ेगी, वह तो सामूहिक लड़ाई होगी।"

बम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान में जो प्रस्ताव पास हुआ उसमें कहा गया कि "भारत अपनी सुरक्षा स्वयं कर सकता है। अंग्रेज भारत छोड़ दें। देश ने साम्राज्यवादी सरकार के विरुद्ध अपनी इच्छा जाहिर कर दी है। अब उसे उस बिंदु से लौटाने का औचित्य नहीं है। अतः अहिसंक ढंग से, व्यापक धरातल पर गांधीजी के नेतृत्व में जनसंघर्ष शुरू करने का निर्णय लेते हैं।"

महात्मा गांधी ने इस प्रस्ताव पर 70 मिनट तक भाषण दिया। उन्होंने कहा- 'मैं आपको एक मंत्र देता हूं करो या मरो।' प्रस्ताव पास होने के बाद ही आधी रात से ब्रिटिश सरकार ने नेताओं की गिरफ्तारी शुरू कर दी। महात्मा गांधी, नेहरू, पटेल, मौलाना आजाद आदि गिरफ्तार कर लिए गए।

तय कार्यक्रम के अनुसार 9 अगस्त 1942 को क्रांति दिवस का एलान किया गया था। बम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान के चारों तरफ उस दिन पुलिस तैनात थी। किन्तु आश्चर्य, अरूणा आसफ अली ने मैदान में तिरंगा फहरा ही दिया। इसके बाद तो पूरे देश में हलचल मच गई। समाजवादी साथियों ने तब नेतृत्व सम्हाल लिया।

अगस्त क्रांति आंदोलन को व्यापक बनाने में श्री जयप्रकाश नारायण, डॉ. राममनोहर लोहिया, अग्रणी रहे। अच्युत पटवर्धन, रामनंदन मिश्र, एस. एम. जोशी, यूसुफ़ मेहर अली भी उनके साथ थे। अरूणा आसफ अली के साथ सुचेता कृपलानी, ऊषा मेहता, माया, वनलता सेन ने भी अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। हजारीबाग जेल में बंदी जयप्रकाश नारायण जेल की दीवार फांदकर बाहर आ गए। उन्हें जनता ने एक हीरो जैसा सम्मान दिया। डॉ. राममनोहर लोहिया ने उषा मेहता, बिट्ठल दास रखवाकर (बाबू भाई), चन्द्रकांत झावेरी और बिट्ठल झावेरी जैसे नौजवानों को साथ लेकर रेडियो स्थापित कर 2 सितम्बर 1942 से प्रसारण सेवा शुरू की। यह प्रसारण 11 नवम्बर 1942 तक चला। डॉ. राममनोहर लोहिया की गिरफ्तारी के बाद उन्हें भयंकर यातनाएं दी गईं।

लंदन से दक्षिण अफ्रीका लौटते हुए गांधी जी ने जहाज पर नवम्बर 1909 में 'हिन्द स्वराज' पुस्तक लिखी थी जिसे 1910 में अंग्रेज सरकार ने जब्त कर लिया था। गांधी जी ने ग्राम विकास को केन्द्र में लाकर वैकल्पिक टेक्नोलॉजी, स्वदेशी का प्रसार तथा सर्वोदय को महत्व देते हुए लोक का पक्ष लिया था। गांधी जी कहते थे मेरे सपनों का स्वराज तो गरीबों का स्वराज होगा। हमारा स्वराज तभी पूर्ण स्वराज होगा, जब जीवन की आवश्यक सुविधाएं हमें उपलब्ध हों। आर्थिक समानता अहिंसापूर्ण स्वराज की चाभी है। आर्थिक समानता के लिए काम करने का अर्थ है पूंजी और मजदूरी के बीच झगड़ों को हमेशा के लिए मिटा देना।

विचारधारा किसी भी राजनीतिक दल की नींव होती है। समाजवादी

विचारधारा व्यक्ति के साथ सामाजिक समानता पर बल देती है। समाज उसी विचारधारा को स्वीकार करता है जो समय के साथ कदम से कदम मिलाकर चले। समाजवादी पार्टी बदलते समय के अनुसार अपनी विचारधारा को वर्तमान समाज की चुनौतियों और सरोकारों से जोड़कर देखती है।

समाजवादी आंदोलन के प्रेरणा पुरुष डाॅ0 राममनोहर लोहिया की मान्यता थी कि एक गरीब देश में राजनीति का पहला और सबसे बड़ा उद्देश्य है लोगों का पेट भरना, अगर लोगों का पेट नहीं भरता तो फिर उस देश की राजनीति निकम्मी और असफल है। आज नौजवानों, किसानों, मजदूरों, महिलाओं के सामने कई तरह की चुनौतियां हैं। इन्हें दूर करके ही खुशहाल समाज की तरक्की का निर्माण किया जा सकता है।

उत्तर प्रदेश में इन विचारों को धरती पर उतारने और खेती-गांव की तरक्की के लिए 2012-2017 की समाजवादी सरकार ने बजट में विशेष व्यवस्थाएं की थी। शहरों और गांवों के बीच संतुलन बनाने का भी काम हुआ था। गांवों में बिजली, पानी, सड़क की व्यवस्था की गई और किसान को आर्थिक सुरक्षा दी गई। आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे के किनारे मंडियों की व्यवस्था इसीलिए की गई जिससे किसानों को फसल का लाभकारी मूल्य मिल सके। इसी तरह समाजवादी सरकार में समाजवादी पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे बनना शुरु हुआ था, जिसे भाजपा सरकार साढ़े तीन वर्ष में भी पूरा नहीं कर सकी।

उत्तर प्रदेश में इन विचारों को धरती पर उतारने और खेती-गांव की तरक्की के लिए 2012-2017 की समाजवादी सरकार ने बजट में विशेष व्यवस्थाएं की थी। शहरों और गांवों के बीच संतुलन बनाने का भी काम हुआ था। गांवों में बिजली, पानी, सड़क की व्यवस्था की गई और किसान को आर्थिक सुरक्षा दी गई। आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे के किनारे मंडियों की व्यवस्था इसीलिए की गई जिससे किसानों को फसल का लाभकारी मूल्य मिल सके।

समाजवादी पार्टी की मान्यता है कि पूंजीवाद के विरुद्ध समाजवादी व्यवस्था को अपनाकर ही भारत आत्मनिर्भर बन सकता है। कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। कृषि में हो रहे घाटे को पूरा करना और निश्चित मुनाफा देना सरकार का दायित्व है। किसान का अपना बाजार होना चाहिए। अन्यथा किसानों की आत्महत्या नहीं रुकेगी। मंडियों के विस्तार से किसान अपनी फसल के लाभप्रद मूल्य पा सकेगा और बिचैलियों की लूट से बचेगा।

कृषि, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में सरकार को ज्यादा से ज्यादा निवेश करना चाहिए। इन क्षेत्रों में विदेशी निवेश से बचना देशहित में होगा। कृषि में विदेशी निवेश वस्तुतः किसानों का उनके खेतों से स्वामित्व छीनना होगा। किसान गुलाम बनकर निवेशक की इच्छानुसार फसल बोने और बेचने को बाध्य होगा।

सन् 1942 की अगस्त क्रांति की अवधारणा 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' के आधार पर सन् 2022 में समाजवादी पार्टी की सरकार बनने पर वैचारिक आंदोलन से स्वतंत्रता संग्राम के सपनों को साकार करने का लक्ष्य है। इसके लिए समाजवादी पार्टी जमीनी स्तर पर संघर्षरत हैं। प्रगति को प्राथमिकता देने के साथ सामाजिक समरसता को आगे बढ़ाना है। जेपी-लोहिया के रास्ते पर समाजवादी पार्टी चलने को संकल्पित है।

25 जून 1975 को देश में आपात काल लगा और सत्ता के दुरुपयोग का दौर शुरु हुआ लेकिन लोकतंत्र विरोधी निर्णयों के खिलाफ जनता में जो आक्रोश पैदा हुआ वह इतिहास का एक जीवंत पृष्ठ है। खेद है कि भाजपा ने उससे कोई सबक

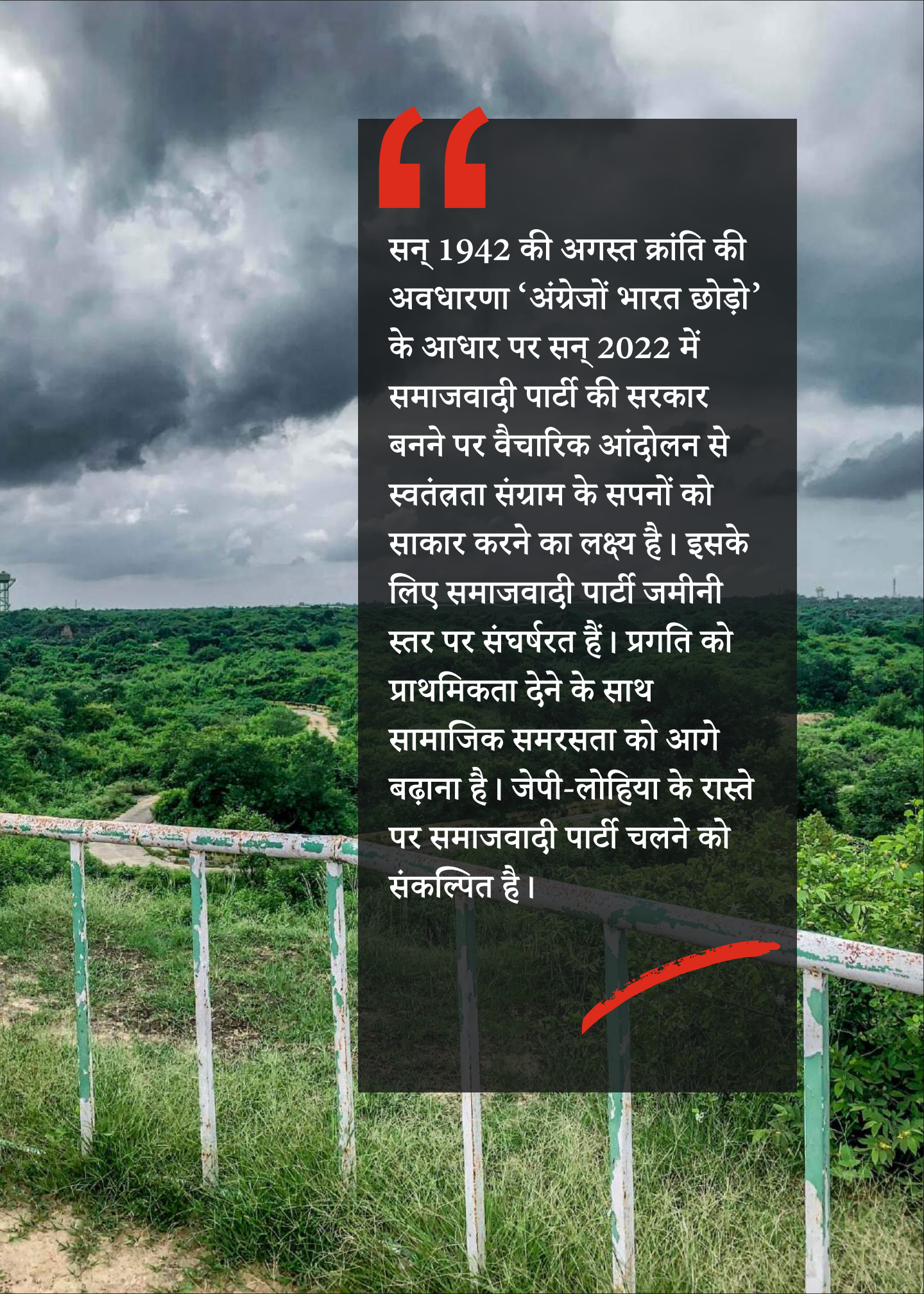

सन् 1942 की अगस्त क्रांति की अवधारणा 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' के आधार पर सन् 2022 में समाजवादी पार्टी की सरकार बनने पर वैचारिक आंदोलन से स्वतंत्रता संग्राम के सपनों को साकार करने का लक्ष्य है। इसके लिए समाजवादी पार्टी जमीनी स्तर पर संघर्षरत हैं। प्रगति को प्राथमिकता देने के साथ सामाजिक समरसता को आगे बढ़ाना है। जेपी-लोहिया के रास्ते पर समाजवादी पार्टी चलने को संकल्पित है।

नहीं सीखा। सत्ता में आने पर भाजपा ने लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में 'संपूर्ण क्रान्ति' से उपजे मुद्दों की भी अनदेखी कर दी। जेपी आंदोलन के भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, मंहगाई, गरीबी के अलावा लोकतंत्र मुख्य मुद्दे थे। भाजपा ने विनाशकारी रास्ता अपना लिया है और लोकतंत्र की आवाज को अनसुना कर दिया। सत्ता पर एकाधिकारी मानसिकता भाजपा में कूट कूटकर भरी हुई है। गरीबों पर अन्याय और भ्रष्टाचार भाजपा राज में थम नहीं रहा है और जनता को परेशान करने वाली गलत आर्थिक नीतियों के चलते लोग त्रस्त हैं।

सन् 1942 के आंदोलन में बड़े पैमाने पर शहरी जनता, किसानों और ग्रामीणों में अद्भुत चेतना जगी थी, जिसके फलस्वरूप राजनैतिक सत्ता में वे साझेदारी मांगने लगे। परन्तु आज भी सही मायनों में राजनीतिक प्रशासन और आर्थिक व्यवहार में पिछड़े और दलित वर्ग को समुचित साझेदारी नहीं मिल पाई है। समाजवादी पार्टी ने सामाजिक न्याय की दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। सबको सम्मानजनक जीने का अधिकार मिले इसके लिए समाजवादी मानते हैं कि सामाजिक न्याय और सौहार्द के साथ ही व्यक्ति और समाज की जब आर्थिक प्रगति होगी तभी लोकतंत्र की सार्थकता सिद्व होगी। डा॰. लोहिया की 'सप्तक्रान्ति' की कल्पना नए समाज की रचना का आधार है।

वैसे भी आज विचारधाराओं में टकराव है। एक तरफ लोकतंत्र है तो दूसरी तरफ अपने को सर्वोपरि दिखाने की एकाधिकारवादी मानसिकता। हमें तय करना है कि किधर जाना है? मूल अधिकार उस समाज और व्यक्ति द्वारा प्रयोग किए जा सकते हैं जो कानून के प्रति आदर रखते हैं, जो जिम्मेदारी तथा

सत्ता में आने पर भाजपा ने लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में 'संपूर्ण क्रान्ति' से उपजे मुद्दों की भी अनदेखी कर दी। जेपी आंदोलन के भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, मंहगाई, गरीबी के अलावा लोकतंत्र मुख्य मुद्दे थे। भाजपा ने विनाशकारी रास्ता अपना लिया है और लोकतंत्र की आवाज को अनसुना कर दिया।

नियंत्रण के सम्यक व्यवहार के लिए तैयार हो, लेकिन जब कोई एक समूह या दल राज्य को कैद करने को संगठित होते हैं या इसे अपना लक्ष्य बना लेते हैं तो किसी समाज के लिए इनका सामना करना बिना किसी अहिंसक प्रतिरोध के सम्भव नहीं हो सकता है। हम लोकतंत्र की परिधियों में रहकर ही संविधान के मूल उद्देश्यों को बचा सकते हैं।

यह कम चिंताजनक नहीं कि सत्ता का केन्द्रीयकरण होने के बराबर संकेत मिल रहे हैं। केन्द्र में अधिनायकवादी प्रवृत्तियां दिख रही है। आखिर क्यों देश में फिर आपात काल की आशंकाएं घर करती जा रही हैं? गत वर्षों में भारत के राजनीतिक तंत्र का सम्प्रदायीकरण करने और पुरातनवाद को बढ़ावा देने के प्रयास किए जाने लगे हैं। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा संविधान में वर्णित मूल अधिकारों को ही नेपथ्य में डाला जा रहा है। नागरिक का अधिकार और सम्मान बड़ा प्रश्न है। लोकनायक जयप्रकाश नारायण का मानना था कि लोकतंत्र का पौधा, चाहे जिस प्रकार का हो, अधिनायकवाद के वातावरण में विकास और उन्नति प्राप्त कर सकता है, इसमें संदेह है।

अगर हम लोकनायक जयप्रकाश जी के कथन को याद करें तो हमारे लोकतंत्र के टूटने का आसन्न खतरा नहीं है, लेकिन हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि इसमें वे सब दोष हैं जिनके कारण लोकतंत्र दूसरे देशों में समाप्त हो गया। लोकतांत्रिक मूल्यों की चेतना के बगैर लोकतंत्र निर्जीव और ढांचा भर रह जाएगा। इस बुनियादी कमजोरी की परख हमें 1975 की आपात् स्थिति में हो चुकी है।

लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने आपातकाल के जनप्रतिरोध के लिए 'सम्पूर्णक्रान्ति' का नारा दिया था। कांग्रेस ने लोकतंत्र से खिलवाड़ किया तो

भाजपा ने भी सम्पूर्णक्रान्ति के लक्ष्य को कमजोर किया है। इन दिनों भाजपा वर्चुअल रैली के नाम पर जनता को धोखा देने और झूठे प्रचार को बढ़ावा दे रही हैं। यह राजनीति की नैतिकता और निष्पक्षता को नष्ट करने की साज़िश है तथा नागरिकों के संवैधानिक अधिकारों पर कुठाराघात है।

कांग्रेस और भाजपा दोनों ने केन्द्र और राज्यों में सरकारें चलाई हैं। दोनों की आर्थिक नीतियां एक समान होने के फलस्वरूप देश में पूंजीवादी ताकतों को बढ़ावा मिला है। गैरबराबरी, बेरोजगारी, महंगाई बढ़ी है। दोनों ने संविधान की मूल भावना को ठेस पहुंचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। सामान्य आदमी को ताकतवर बनाने के बजाय उसको असहाय, बाजार के अधीन करने का काम किया है। इनके कारण संवैधानिक संस्थाओं में जनविश्वास को खतरा उत्पन्न हुआ है।

सभी को खुशहाल और समृद्ध बनाने का पुराना वादा आज भी अधूरा है। स्वतंत्रता संग्राम के योद्धाओं और बलिदानियों ने जो सपने देखे थे, अब कोई उनकी चर्चा भी नहीं करता है। सभी को पर्याप्त अवसर देने और सतत विकास के वादे भी पूरे नहीं हुए। राष्ट्रीय एकता, धर्मनिरपेक्षता पर आधारित जीवन प्रणाली, शुचिता, सत्य के प्रति आग्रह आदि मूल्यों की नैतिकता भी आज तक पूरी नहीं हो पाई है। इन मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए समाजवादी ही प्रतिबद्ध रहे हैं।

आजादी के 74वें वर्ष में सामाजिक-आर्थिक विषमता, राजनीतिक विभेदकारी नीति-रीति, में कोई सुधार नहीं हुआ। बाबा साहेब डाॅ भीमराव अंबेडकर का स्पष्ट मत था कि भारत के स्वतंत्र होने से ही सब कुछ साध्य होगा, ऐसी बात नहीं। भारत एक ऐसा राष्ट्र बनना चाहिए जिसमें प्रत्येक नागरिक के धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकार समान हों और हर एक के व्यक्तित्व के विकास के लिए उचित अवसर मिल सके।

यह बात तो पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह भी मानते थे कि आज का भारत उनकी पीढ़ी के सपनों का भारत नहीं है। राष्ट्रीय और व्यक्तिगत चरित्र में आई गिरावट से वे चिंतित रहते थे। उनका कहना था कि प्रशासन की स्पष्ट नीति हो, दृढ़ता से कार्यान्वयन हो लेकिन कार्यान्वयन करने वालों का चरित्र संदेह रहित होना चाहिए। आचरण में ईमानदारी और चरित्र की शुद्धता पर उनका विशेष बल था।

विकास का नियोजन समाजवादी नहीं होने से देश के विविध तबके किसान, मजदूर, आदिवासी, दलित, युवा, कारीगर, महिलाएं, वंचित और शोषित ही बने रहे हैं। बेरोजगारी बढ़ने से नौजवानों का भविष्य अंधेरे में है। छात्र-छात्राओं की आवाज को कुचला जा रहा है। वैश्वीकरण, पूंजीवाद, उदारीकरण, निजीकरण के जरिए पूंजीवादी ताकतों को ही लूट की छूट मिली हुई है।

देश के समक्ष आज जो गम्भीर समस्याएं हैं इनका हल पूंजीवादी व्यवस्था से नहीं समाजवादी व्यवस्था से होगा। कर्ज के बोझ से लदे हजारों किसान फांसी के फंदे पर झूल चुके हैं। अधिकाधिक मुनाफा और सहूलियतों के साथ पूंजी घरानों को आमंत्रित करना देश की संप्रभुता, स्वावलम्बन, आजीविका पर हमला है। आत्मनिर्भरता का यह तथाकथित तरीका बहुत घातक होगा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) अपना एजेण्डा देश का राजनीतिक

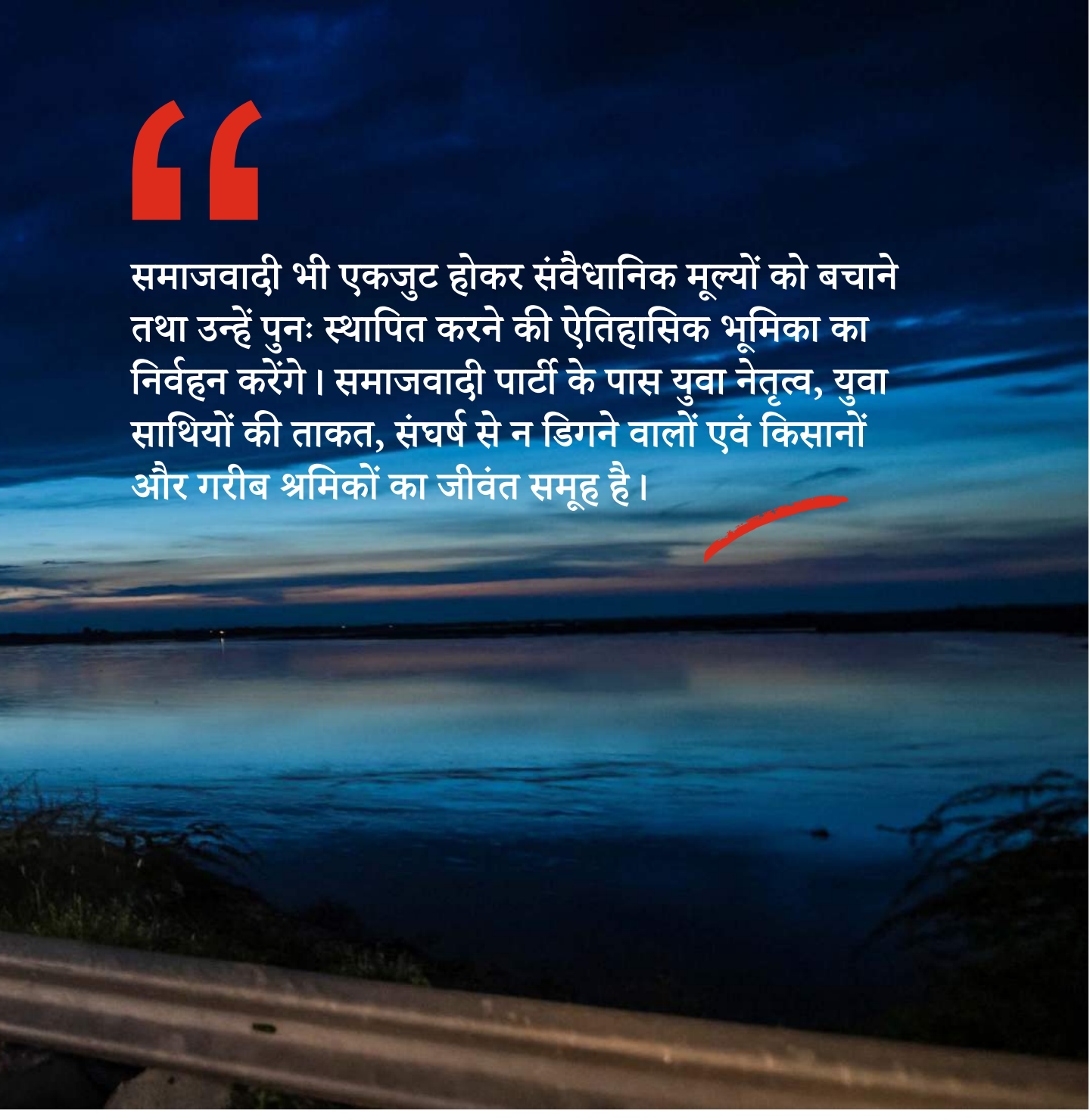

समाजवादी भी एकजुट होकर संवैधानिक मूल्यों को बचाने तथा उन्हें पुनः स्थापित करने की ऐतिहासिक भूमिका का निर्वहन करेंगे। समाजवादी पार्टी के पास युवा नेतृत्व, युवा साथियों की ताकत, संघर्ष से न डिगने वालों एवं किसानों और गरीब श्रमिकों का जीवंत समूह है।

एजेण्डा बनाना चाहता है। वह जातिवाद और सम्प्रदायवाद को सर्वोच्च स्थान दिलाने में जी-जान से जुटा है। आजादी के राष्ट्रीय आंदोलन में हिस्सा न लेने वाले और आपात काल लगाने वाले दोनों एक ही नाव के सवार हैं।

जाति और जातीयता का सर्वाधिक विरोध डाॅ भीमराव अंबेडकर और डाॅ राममनोहर लोहिया ने किया। डाॅ अंबेडकर मानते थे कि जाति व्यवस्था मनुष्य को संवेदनहीन बनाती है। जाति ने जन चेतना को मार दिया है। उसने जनजागरण को असंभव बना दिया है। जातिप्रथा में योग्यता और गुण के लिए कोई स्थान नहीं। यह जातिप्रथा न केवल मानव गरिमा के विरुद्ध है बल्कि समतामूलक समाज के स्वप्न के विरुद्ध भी है।

डाॅ राममनोहर लोहिया तो मानते थे कि

हिन्दुस्तान की दुर्गति और हजारों वर्ष की गुलामी के पीछे जातिप्रथा रही है। परिवर्तन के विरुद्ध और स्थिरता के लिए जातिप्रथा एक भयंकर शक्ति है। उन्होंने देश में जाति तोड़ो आंदोलन चलाते वक्त यह नारा भी दिया था-"सोशलिस्टों ने बांधी गांठ, पिछड़े पावें सौ में साठ।" इस तरह वह समाज में व्याप्त जड़ता को तोड़ना चाहते थे। विशेष अवसर का सिद्धांत इसी को पुष्ट करता है।

अगस्त क्रांति के शहीदों का सपना देश में किसान, मजदूर और युवाओं का राज स्थापित करना था ताकि सभी को हक़ व सम्मान का जीवन हासिल हो सके। इस सपने को साकार करने की जिम्मेदारी समाजवादी पार्टी की है। जिस तरह समाजवादियों ने अगस्त क्रांति, जेपी आंदोलन के दौरान अग्रणी भूमिका अदा की थी उसी तरह आज भी उसकी स्वर्णिम परंपरा को आगे बढ़ाते हुए हम समाजवादी भी एकजुट होकर संवैधानिक मूल्यों को बचाने तथा उन्हें पुनः स्थापित करने की ऐतिहासिक भूमिका का निर्वहन करेंगे। समाजवादी पार्टी के पास युवा नेतृत्व, युवा साथियों की ताकत, संघर्ष से न डिगने वालों एवं किसानों और गरीब श्रमिकों का जीवंत समूह है।

समाजवादी पार्टी लोगों की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने को प्रतिबद्ध है। भविष्य में विश्वस्तरीय ढांचागत संरचना तैयार करने की भी योजना है। समाजवाद के जरिए उद्योग, लघु, सूक्ष्म एवं कुटीर उद्योग और कृषि के लिए भी आधारभूत संरचना तथा तकनीकी रूप से सक्षम सुविधाओं के निर्माण हेतु निरन्तर प्रयासशील रहा जाएगा।

समाजवादी पार्टी लोगों की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने को प्रतिबद्ध है। भविष्य में विश्वस्तरीय ढांचागत संरचना तैयार करने की भी योजना है। समाजवाद के जरिए उद्योग, लघु, सूक्ष्म एवं कुटीर उद्योग और कृषि के लिए भी आधारभूत संरचना तथा तकनीकी रूप से सक्षम सुविधाओं के निर्माण हेतु निरन्तर प्रयासशील रहा जाएगा।

समाजवादी पार्टी डिजीटल परिवर्तन की पक्षधर है। यह समय की आवश्यकता है कि भविष्य में इंटरनेट और डिजिटल टेक्नालॉजी से व्यवस्था प्रभावित होगी। समाजवादी पार्टी इस वास्तविकता को पहले से ही महसूस कर चुकी थी। इस परिवर्तन की बुनियाद समाजवादी सरकार में रखी गई थी जब छात्र एवं छात्राओं को लैपटॉप प्रदान किये गये। समाजवादी सरकार में छात्र-छात्राओं को 18 लाख लैपटाप बांटे गए थे ताकि वे आज की दुनिया से जुड़ सकें। सोशल मीडिया के कारण सुविधायें विकसित हुई हैं। इस माध्यम में पारदर्शिता एवं निष्पक्षता जरूरी है। इससे व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और लोकतांत्रिक प्रणाली को ताकत मिली है। बैंकिंग सहित हर क्षेत्र में इसका प्रयोग किया जाता है।

दुनिया तकनीकी क्षेत्र में तेजी से बढ़ रही है, नित नए आविष्कार हो रहे हैं। प्रगति के लिए समय के साथ चलना जरूरी है। व्यवस्था में बदलाव की सुविधा के लिए समाजवादी सरकार में आधुनिकतम तकनीक के साथ यूपी डायल 100 नम्बर सेवा शुरू की गई थी जिससे किसी घटनास्थल पर बिना देर किए पुलिस पहुंच सके। महिलाओं से छेड़छाड़ रोकने के लिए 1090 वूमेन पावर लाइन सेवा, बीमारों को अस्पताल पहुंचाने के लिए 108 समाजवादी एम्बूलेंस सेवा तथा गर्भवती महिलाओं के लिए 102 नम्बर एम्बूलेंस सेवा की व्यवस्था की गई थी। समाजवादी पेंशन योजना के अंतर्गत 6 हजार रुपये प्रतिवर्ष 55 लाख महिलाओं को दिये जाने की व्यवस्था समाजवादी सरकार में लागू थी।

गांधी जी का सभी धर्मों के प्रति समभाव का आग्रह, अधर्म का विरोध और सत्याग्रह तथा अहिंसा का दर्शन, डॉ राममनोहर लोहिया का अन्याय के खिलाफ सिविल नाफरमानी का संघर्षशील मार्ग और लोकनायक जयप्रकाश नारायण की लोकनीति एक नए परिवर्तन की बुनियाद बन सकती है। अगर मानवता को पूंजी

और सत्ता की हिंसा से मुक्ति दिलानी है तो समाजवाद का सपना देखना होगा। समाजवाद महज एक राजनैतिक विचारधारा ही नहीं बल्कि एक संपूर्ण जीवनदर्शन भी है। भारत में समाजवादी होने का अर्थ है, समाजवादी दर्शन के अनुसार अपने नित्य व्यवहार को ढालना। इसका अर्थ है सादगी, मितव्ययिता, परस्पर व्यवहार में समता, प्रेम, ईमानदारी, नेतृत्व के प्रति निष्ठा तथा साध्य-साधन की पवित्रता को अपनाना।

समाजवादी पार्टी हमेशा पीड़ितों और अन्याय के शिकार लोगों के साथन की व्यवस्था कराई गई। जो श्रमिक इस दौर में जान गंवा बैठे उनके परिवारीजनों को एक-एक खड़ी रही है। इसलिए कोरोना संकट में दर-बदर हुए श्रमिकों को राहत पहुंचाने में समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता दिन रात लगे रहे। हजारों श्रमिकों एवं जरूरतमंदों को भोज लाख रुपए की मदद दी गई। रास्ते में फंसे श्रमिक परिवारों को उनके घर भिजवाया गया।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव एवं सांसद मोहम्मद आज़म खाँ के साथ जो व्यवहार भाजपा सरकार कर रही वह अनैतिक एवं अमानवीय है। लोकतंत्र में सरकार का आचरण बिना रागद्वेष का होना चाहिए।

भाजपा सरकार द्वारा समाजवादी पार्टी के नेताओं को अपमानित करने और यातना देने के लिए झूठे केसों में फंसाया जाता रहा है। भाजपा समझती है कि इससे समाजवादी पार्टी का मनोबल तोड़ा जा सकता है। भाजपा इसमें कभी सफल नहीं हो सकेगी। भाजपा ने अब तक कोई वादा नहीं निभाने का विश्व रिकार्ड बनाया है। समाज का हर वर्ग उसकी कुनीतियों से बुरी तरह त्रस्त है।

आज हमारे सामने सन् 2022 की चुनौतियां हैं। ऐसे में ''बाइस में बाइसिकल'' से ही रास्ता तय किया जा सकेगा। नौजवान, किसान इसी के माध्यम से खुशहाली पाएगा। बाइस में बाइसिकल में नौजवानों के लिए रोजगार का मार्ग प्रशस्त होगा। बाइस में बाइसिकल से ही कानून का राज स्थापित होगा। बाइस में बाइसिकल से ही सबको सम्मान और न्याय सुनिश्चित किया जायेगा।

8 अगस्त 1942 को भारत की स्वतंत्रता के लिए अंतिम और निर्णायक युद्ध का आव्हान करते हुए गांधीजी ने हर हिन्दुस्तानी से कहा था "वह अपने को आजाद समझे। लड़ाई छिड़ने पर स्वभावतः उनके मार्गदर्शन के लिए कोई नेता बाहर नहीं रहेंगे, इसलिए उनको ही अपना नेता बनकर अपनी जिम्मेदारी को समझकर अपना कार्यक्रम बनाकर युद्ध को चलाना होगा।"

आज यही उद्बोधन समाजवादी पार्टी के हर कार्यकर्ता, नेता, पदाधिकारी के लिए मार्गदर्शन का प्रेरक संदेश है। सन् 2022 में परिवर्तन के लिए खुद से ही हर समाजवादी कार्यकर्ता को पहल करनी होगी। 2022 में समाजवादी सरकार का काम जनता के नाम का उद्घोष रहेगा।

आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक परिवर्तन के लिए युवाओं, किसानों, मेहनतकशों और समाज के विचारशील वर्गों की सहभागिता ही हमारी ताकत होगी। देश की विविधता को नष्ट करने की साजिशों के दौर में संवैधानिक मूल्यों को बचाने तथा हर नागरिक का समृद्ध एवं सुरक्षित जीवन सुनिश्चित करने के लिए समाजवादी पार्टी प्रतिबद्ध है। सन् 2022 के लिए अपनी तैयारियों में हमें कोई कसर नहीं रखनी है। लोकतंत्र को बचाने के सघन अभियान में आप सभी साथियों से एकजुटता और निष्ठा के साथ अनवरत सक्रियता की अपेक्षा करता हूं।

~~~

9 अगस्त 2020

(अखिलेश यादव)
राष्ट्रीय अध्यक्ष
समाजवादी पार्टी

~~~

सदन से सड़क तक
समाजवादी तेवर

भारतीय जनता पार्टी सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ समाजवादी पार्टी ने सदन से सड़क तक मुखर विरोध को और तेज कर दिया है। चाहे विधानमंडल का सत्र हो या धरना-प्रदर्शन, लोकतांत्रिक तरीके से विरोध के हरेक तरीके को आजमाते हुए उत्तर प्रदेश के समाजवादी लगातार जनता से जुड़े मुद्दे उठा रहे हैं। भाजपा सरकार ने पुलिस के जरिए समाजवादियों का दमन शुरू किया है लेकिन पार्टी के नेताओं, पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं के जोश में कोई कमी नहीं। पेश है ***दुष्यंत कबीर*** *की रिपोर्ट:*

फोटो: नईम अंसारी एवं सुमित कुमार

जनपदों में गूंज रहा भाजपा हटाओ

बढ़ती बेरोजगारी व महंगाई, बेकाबू कोरोना संक्रमण, भ्रष्टाचार, बिगड़ती कानून-व्यवस्था और किसानों से जुड़े मुद्दे को लेकर समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने 21 सितंबर को प्रदेश भर में जोरदार प्रदर्शन किया। तहसील स्तर से लेकर जिला मुख्यालय तक सपा सांसद, विधायक समेत तमाम कार्यकर्ता सड़कों पर उतरे।

पुलिस ने कई स्थानों पर प्रदर्शन कर रहे शांतिपूर्ण समाजवादी कार्यकर्ताओं पर अकारण लाठीचार्ज किया। कई जिलों में कार्यकर्ताओं ने गिरफ्तारी भी दी। प्रदेश भर में समाजवादी पार्टी के प्रदर्शन की गूंज रही। प्रदर्शन में महिलाएं भी बड़ी संख्या में शामिल रही। समाजवादी कार्यकर्ताओं ने पूरे प्रदेश में जबर्दस्त प्रदर्शन कर सरकार को हिलाकर रख दिया।

घबड़ाए प्रशासन ने जगह-जगह बेरीकेडिंग लगाकर सैलाब रोकने की असफल कोशिश की लेकिन वे समाजवादियों के जोश को रोक नहीं सके। जिला प्रशासन को ज्ञापन सौंपने के साथ समाजवादी नेताओं ने जनता की मांगों को शीघ्र मानने का आग्रह किया।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर हुए इस कार्यक्रम में सभी जनपदों में तहसील स्तर पर समाजवादी कार्यकर्ताओं ने भाजपा सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन करते हुए महामहिम राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन जिला प्रशासन को सौंपा। तहसील मुख्यालय जाते हुए समाजवादी कार्यकर्ताओं को पुलिस ने कई स्थानों पर रोकेन की कोशिश की, उनसे झड़पें हुई।

पार्टी की ओर से सौंपे गए ज्ञापन में कोरोना संकट काल में आवश्यक उपकरणों की खरीद में घोटाला, स्वास्थ्य सेवाओं में अनियमितता, भ्रष्टाचार, सरकारी उत्पीड़न में वृद्धि, बेहाल किसान, बेरोजगारी और ध्वस्त कानून व्यवस्था के मुद्दे उठाते हुए राज्यपाल महोदया से संवैधानिक कार्यवाही करने का आग्रह किया गया है।

21 सितंबर को सुबह से ही विभिन्न जनपदों मे हजारों की संख्या में एकत्र होकर समाजवादी कार्यकर्ताओं ने "नहीं चाहिए भाजपा" का नारा बुलंद करते हुए सरकारी मनमानी, ध्वस्त कानून व्यवस्था, बढ़ती मंहगाई और बेरोजगारी, लॉकडाउन के दौरान आए श्रमिकों को रोजगार नहीं मिलने, किसानों की बदहाली, नौजवानों की उपेक्षा, निजीकरण, आरक्षण समाप्ति की साजिश, महिलाओं-बच्चियों से बढ़ती दुष्कर्म की घटनाओं तथा बदले की भावना से समाजवादी नेताओं पर फर्जी केस लगाने, गिरफ्तारी करने के प्रति विरोध व्यक्त किया। राज्यपाल को सम्बोधित ज्ञापन में क्षेत्रीय समस्याओं का जिक्र कर उनके निराकरण का भी आग्रह किया गया।

समाजवादी छात्रसभा, उ.प्र.

बहू बेटियो पर
बलात्कर
बन्द करों बन्द करों
जय समाजवाद

बेरोजगारी

9 बजे 9 मिनट रो

जगार की मांग कर रहे करोड़ों बेरोजगारों के 9 सितंबर को रात 9 बजे 9 मिनट पर लाइट आफ कैंडिल मार्च अभियान में समाजवादी पार्टी ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। बेरोजगारों के अभियान को सपा का व्यापक समर्थन मिला। समाजवादी पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव भी अपने घर की बत्तियां रात 9 बजे बुझाकर अपनी पत्नी व पूर्व सांसद डिम्पल यादव के साथ 9 मिनट के लिए मोमबत्ती जलाकर नौजवानों की मुहिम में शामिल हुए।

श्री अखिलेश यादव ने ट्वीट कर कहा कि "आज आने वाले कल के बदलाव का इतिहास लिख दिया गया, सियासत के आसमान पर रोशनी से इंकलाब लिख दिया। आज युवाओं ने भाजपा के शासनकाल की उल्टी गिनती की शुरुआत कर दी।"

सपा अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने 9 सितंबर के इस अनोखे विरोध प्रदर्शन से पहले ही ट्वीट कर युवाओं से 9 सितंबर की रात 9 बजे 9 मिनट तक बेरोजगारी के खिलाफ क्रांति की मशाल जलाने की अपील की थी, ताकि आपकी आवाज सरकार के कानों तक पहुंचे। अखिलेश जी की अपील का व्यापक असर हुआ। रोजगार के लिए बेरोजगारों के इस अभियान में सपा पूरे संगठन नेताओं उसके बड़ी संख्या में समर्थक शामिल हुए।

आर्य नगर विधान

इस अभियान में सपा के नेताओं सांसदों, विधायकों, कार्यकर्ताओं ने बढचढ़ कर हिस्सा लिया । जगह-जगह जुलूस निकाले गए। सपा के राष्ट्रीय महासचिव प्रो. राम गोपाल यादव ने ट्वीट कर लिखा कि 9 बजे 9 मिनट बेरोजगारी और अराजकता के खिलाफ सपा का शंखनाद है। समाजवादी पार्टी के चारों युवा संगठनों के नेताओं और पदाधिकारियों, विधायकों, सांसदों ने भी बढ़ चढ़ कर इस अभियान में हिस्सा लिया।

युवा बोले- हमें चाहिए रोजगार

बढ़ती महंगाई, बेलगाम बेरोजगारी और पांच साल की संविदा पर नौकरी के विरोध में 17 सितंबर 2020 को समाजवादी नौजवान सड़क पर उतर आए। समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने आज प्रदेश के लगभग सभी जनपदों में जोरदार प्रदर्शन करते हुए भीख मांगकर पकौड़े तल कर तथा जूता पालिश करके भाजपा सरकार के खिलाफ जनता के आक्रोश को अभिव्यक्ति दी। रोजगार की मांग कर रहे युवाओं एवं महिलाओं पर पुलिस ने जगह-जगह लाठियां भांजी और बड़ी संख्या में गिरफ्तारी की। प्रयागराज में जबरदस्त प्रदर्शन हुआ जिस पर पुलिस ने लाठियां चलाई। नौजवान बड़ी संख्या में यहां एकत्र हुए थे।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने युवाओं के प्रदर्शन पर पुलिसिया जुल्म को घोर निंदनीय बताते हुए कहा कि समाजवादी पार्टी द्वारा उत्तर प्रदेश के जिलों में ज्ञापन देकर शांतिपूर्ण तरीके से रोजगार की मांग करने वाले युवाओं पर सरकार ने लाठी उठाकर अच्छा नहीं किया। बेरोजगारी के कारण निराश युवा के साथ ऐसा व्यवहार सरकार की असंवेदनशीता दर्शाता है। श्री अखिलेश यादव ने साथ ही यह भी कहा है कि 'जब जवान भी खिलाफ, किसान भी खिलाफ। तब समझो दम्भी सत्ता के दिन अब बचे हैं चार।'

प्रदर्शन के दौरान लखनऊ में समाजवादी पार्टी कार्यकर्ताओं ने कई स्थानों पर प्रदर्शन कर भाजपा सरकार के विरूद्ध नारेबाजी की। लखनऊ विश्वविद्यालय में समाजवादी छात्र सभा के नौजवानों ने प्रदर्शन किया। पुलिस ने कई छात्रों को गिरफ्तार कर लिया। महिलाओं के जत्थे को, जो जिलाधिकारी महोदय के कार्यालय तक ज्ञापन देने जा रहा था, पुलिस ने रोक लिया और उन्हें हिरासत में ले लिया। लखनऊ में कई अन्य स्थानों पर भी प्रदर्शन हुए। प्रदर्शन में शामिल नौजवानों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। कई कार्यकर्ताओं को घरों से ही नहीं निकलने दिया गया।

कानपुर में सैकड़ों युवा कार्यकर्ताओं ने घंटी, थाली पीटकर जबरदस्त प्रदर्शन किया। प्रदर्शन में शामिल बहुत से युवक सांकेतिक विरोध स्वरूप अर्धनग्न थे। तमाम समाजवादी पार्टी कार्यकर्ताओं ने हाथों में कटोरा लेकर भीख मांगी, पकौड़े भी तले। राह चलते लोगों के जूतों में बूट पालिश की। कानपुर में बड़ी संख्या में कार्यकर्ता गिरफ्तार हुए। कई अन्य जनपदों में भी प्रदर्शनकारियों ने सड़क पर पकौड़े तल कर

ज्ञापन में कहा गया है कि शिक्षा का बाजारीकरण, भ्रष्टाचार और बीएड प्रवेश में अनुसूचित जाति व जनजाति के छात्रों को मिलने वाले निःशुल्क प्रवेश पर रोक लगाए जाने से प्रदेश के छात्रों, नौजवानों मे◌ं सरकार के प्रति भारी आक्रोश है। दलितों, पिछड़ो व आदिवासियों और समाज के किसी भी कमजोर वर्ग के अधिकारों के खिलाफ किसी भी निर्णय का समाजवादी युवा संगठन पुरजोर विरोध करेगे।

विरोध प्रदर्शन किया। आगरा में समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने मंहगाई, बेकारी और सरकारी कुनीतियों के खिलाफ नारेबाजी की और प्रदर्शन किया।

इससे पहले 14 सितंबर को समाजवादी युवा संगठनों ने केंद्र और राज्य सरकार की गलत नीतियों के विरूद्ध प्रदेश स्तर पर बेहाल किसान, महंगी शिक्षा, बेरोजगारी, निजीकरण, भ्रष्टाचार और आरक्षण पर वार के विरोध में महामहिम राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन जिला प्रशासन के माध्यम से सौंपे।

प्रदेश के सभी मंडलों एवं जनपदों में युवा शक्ति ने अपनी ताकत दिखाई। वाराणसी में शांतिपूर्ण ढंग से ज्ञापन देने जा रहे नौजवानों पर पुलिस ने लाठीचार्ज कर अपनी बर्बरता प्रदर्शित की। प्रदेश के सभी जनपदों में सरकार के खिलाफ समाजवादी नौजवानों ने धरना दिया और जोरदार नारेबाजी के साथ ज्ञापन सौंपे।

ज्ञापन में कहा गया है कि मंहगी शिक्षा से

गरीब व मध्यम वर्ग के बच्चो का पढ़ना मुश्किल हो गया है। निजीकरण से रोजगार व आरक्षण छीना जा रहा है। प्रदेश में किसान बदहाल है, हजारों किसानों ने तंगहाली में आत्महत्या कर ली है। किसानों से किए वादे पूरे नही हुए। समय से खाद भी नही मिल रही है। ज्ञापन में महामहिम राज्यपाल से मांग की गई है कि वह राज्य सरकार को निर्देशित करें कि मंहगी शिक्षा, बेरोजगारी, निजीकरण, भ्रष्टाचार व

आरक्षण पर हो रहे वार पर तत्काल रोक लगाए अन्यथा समाजवादी नौजवान सड़क पर उतरकर और बड़े आंदोलन व प्रदर्शन के लिए बाध्य होंगे।

31 अगस्त को समाजवादी छात्र सभा के आह्वान पर जब छात्र हितों के मुद्दों को लेकर सैकड़ों नौजवान प्रदेश की राज्यपाल महोदया को ज्ञापन देने जा रहे थे, लखनऊ के गौतमपल्ली थाने के पास उन पर बर्बर लाठीचार्ज किया गया।

ज्ञापन में मांग की गई कि नीट, जेईई सहित विभिन्न प्रतियोगी तथा स्नातक, परास्नातक की अंतिम वर्ष की परीक्षाएं स्थगित की जाए। छात्रों पर फीस जमा करने के लिए दबाव न बनाएं और उस कारण परीक्षाफल न रोका जाय। भाजपा सरकार द्वारा शिक्षण संस्थानों के निजीकरण पर रोक लगे तथा लखनऊ विश्वविद्यालय में अतिथि प्रवक्ता के 245 पदों पर आरक्षण नियमावली के तहत ही भर्तियां हों।

वहीं कोरोना संकट काल में नीट और जेईई की परीक्षा कराने के भाजपा की केन्द्र सरकार के निर्णय के विरोध में 27 अगस्त को लखनऊ में राजभवन के सामने प्रदर्शन कर रहे समाजवादी पार्टी के युवा संगठनों के शान्तिपूर्ण अहिंसक प्रदर्शन पर पुलिस ने बर्बर लाठीचार्ज किया।

विधानमंडल सत्र में सरकार को घेरा

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर विधानमंडल के विगत सत्र के मौके पर समाजवादी पार्टी के विधायकों ने विधान भवन स्थित चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा पर जनसमस्याओं को लेकर धरना दिया। भाजपा सरकार द्वारा जनता के साथ छल तथा धोखा देने को लेकर विधायकगण ने अपने हाथों में तख्तियां लेकर धरना दिया। इस धरना कार्यक्रम में समाजवादी पार्टी के विधानसभा एवं विधान परिषद के विधायक शामिल रहे। विधानसभा एवं विधान परिषद का सत्र शुरू होने के ऐन पहले सपा के विधायकों ने मंहगाई, भाजपा राज में भ्रष्टाचार, लूट, बेकारी, सत्ता के दुरूपयोग, झूठे वादों के खिलाफ नारे लगाए।

उन्होंने जो तख्तियां ले रखी थी उनमें बदले की भावना से मोहम्मद आजम खां के खिलाफ लगाए गए झूठे मुकदमों को वापस लेने तथा उन्हें जेल से रिहा करने की मांग की गई । सरकार की तानाशाही की निंदा के साथ यह भी पूछा गया कि मुख्यमंत्री जी की टीम-इलेवन कहां है? जबकि जनता कोरोना और अपराधों की शिकार है। किसान को न खाद मिल रही है और न बाढ़ पीड़ितों को आर्थिक सहायता। भाजपा के अंधेर राज से जनता तौबा कर चुकी है।

दोनों सदनों में भी समाजवादी पार्टी के विधायकों ने सरकार को जमकर घेरा। विधान परिषद में सपा के सदस्यों ने आर्थिक आधार पर आरक्षण का विधेयक पारित कराए जाने के दौरान उनके द्वारा रखे गए संसोधन प्रस्ताव को संज्ञान में न लेने का अरोप लगाते हुए जमकर हंगामा और नारेबाजी की। सपा के सदस्यों ने कहा कि जब यह माना गया है कि कर्मचारियों की त्रुटि की वजह से यह घटना हुई तो इस पर पुनर्विचार किया जाए।

समाजवादी पार्टी के विधायकों ने सदन की कार्यवाही स्थगित होने के बाद कहा कि

भाजपा ने विधानमण्डल की बैठक में आनन-फानन में विधेयक पास कराकर जहां सदन की गरिमा से खिलवाड़ किया है वही यह भी जाहिर कर दिया है कि उसे विपक्ष के लोकतांत्रिक अधिकारों के हनन में कतई संकोच नहीं है।

विधायकों ने यह भी कहा कि आर्थिक आधार पर आरक्षण की व्यवस्था, सम्पत्ति क्षति की वसूली, मंडी विधेयक आदि पर विपक्ष को सदन में अपनी बात रखने का अधिकार ही नहीं दिया गया। बड़ी-बड़ी इन्वेस्टर्स मीट का भी कोई परिणाम नहीं निकला है। नौजवान रोजगार के बगैर मारा-मारा घूम रहा हैं। खाद नहीं मिलने से खरीफ फसल बर्बाद हो जाएगी। बाढ़ और कोरोना संकट से लोग त्रस्त है। भाजपा सरकार इस सबसे बेपरवाह है। भाजपा आपदा को अवसर बनाकर सत्ता का दुरुपयोग कर रही है।

राजभवन रोके सरकार की मनमानी

समाजवादी पार्टी के प्रतिनिधिमण्डल ने 18 सितंबर को महामहिम राज्यपाल महोदया से मिलकर उनसे प्रदेश में बढ़ती अराजकता और समाजवादी नेताओं पर बदले की भावना से हो रही कार्यवाहियों के खिलाफ रोष प्रकट करते हुए तत्काल उन पर नियंत्रण किए जाने की मांग की है।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल, विधान परिषद सदस्यगणों श्री सुनील सिंह 'साजन', श्री आनन्द भदौरिया एवं श्री उदयवीर सिंह के प्रतिनिधिमण्डल ने महामहिम राज्यपाल से भेंट कर ज्ञापन सौंपा।

ज्ञापन में कहा गया है कि उत्तर प्रदेश में भाजपा सरकार विपक्ष के प्रति और खासकर समाजवादी पार्टी के प्रति द्वेषपूर्ण व्यवहार कर रही है। संविधान की ली गई शपथ के प्रतिकूल उसका आचरण भेदभावपूर्ण होता है। इससे प्रदेश में कानून व्यवस्था की स्थिति दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है। सत्ता संरक्षित अपराधियों के कारनामों से जनता भयभीत है।

स्थिति यह है कि प्रदेश में निर्दोष सताए जा रहे हैं। फर्जी एनकाउण्टर और हिरासत में मौतें हो रही हैं। अपहरण, लूट, हत्या के मामले बढ़ते जा रहे हैं। सरकार इन पर नियंत्रण नहीं कर पा रही है। महिलाओं और बच्चियों के साथ तो आए दिन दुष्कर्म की घटनाएं हो रही है। फर्जी आंकड़ों से यह सरकार काम चला रही है।

सर्वाधिक चिंता का विषय तो यह है कि सत्तादल के इशारे पर पुलिस का व्यवहार गैरजिम्मेदाराना और संवेदनहीन होता जा रहा है। लोकतंत्र में सत्ता और विपक्ष दोनों की संवैधानिक मान्यता है किन्तु उत्तर प्रदेश में भाजपा सरकार अपनी एकाधिकारवादी मानसिकता से काम कर रही है। शांतिपूर्ण अहिंसात्मक विरोध भी उसे बर्दाश्त नहीं है। बेरोजगारी से परेशानहाल नौजवान जब अपनी मांग उठाते हैं तो उन पर लाठियां बरसती हैं। यह कहां का न्याय है?

प्रतिनिधिमण्डल ने राज्यपाल महोदया को बताया कि विभिन्न जनपदों में समाजवादी पार्टी के नेताओं को बदले की भावना से उत्पीड़न का शिकार बनाया जा रहा है। रामपुर के सांसद और पूर्वमंत्री मोहम्मद आजम खां और उनके परिवार पर तमाम फर्जी केस लगा दिए गए हैं।

जनपद प्रतापगढ़ की स्थिति तो और भी ज्यादा गम्भीर है। यहां भाजपा सरकार की गलत नीतियों का विरोध करने के कारण

समाजवादी पार्टी के नेताओं पर सत्तादल के इशारे पर झूठे मामले गढ़े जा रहे हैं। ब्लाक प्रमुख पट्टी श्रीमती माधुरी यादव के पति श्री सभापति यादव को एनकाउण्टर किए जानें की धमकी दी जा रही है। उनका जीवन असुरक्षित है। पुलिस से ही उन्हें खतरा है। समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष श्री छविनाथ यादव की फर्जी मुकदमें में गिरफ्तारी के बाद उनके भाई का भी उत्पीड़न हो रहा है। कुण्डा नगर पंचायत की चेयरमैन श्रीमती सीमा यादव के पति और पूर्व चेयरमैन श्री गुलशन यादव को भी आए दिन पुलिस परेशान कर रही है।

समाजवादी पार्टी के ज्ञापन में मांग की गई है कि भाजपा के विपक्ष के प्रति असहिष्णु रवैये से जनता में भय और आक्रोश है, राज्यपाल महोदया अपने संवैधानिक पद के दायित्व का निर्वहन करते हुए तत्काल भाजपा सरकार के असंवैधानिक कार्यवाहियों पर रोक लगाए।

चुनावों को गंभीरता से लें : अखिलेश जी

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि साल 2022 के विधानसभा चुनावों को हमें पूरी गंभीरता से लेना होगा। भाजपा चुनाव में धांधली की तैयारी में है। झूठे फर्जी आरोप लगाकर समाजवादी पार्टी को बदनाम करने की साजिशें होने लगी है। समाज में नफरत और अफवाह के जरिए भ्रम और भय फैलाने की भाजपा की रणनीति से हमें सावधान रहना है। पार्टी संगठन को बूथस्तर तक मजबूत बनाकर हम भाजपा की साजिशों का मुकाबला कर सकेंगे।

श्री यादव ने कहा है कि सामाजिक न्याय का मुद्दा युवा पीढ़ी के भविष्य के साथ जुड़ा है। गरीब, पिछड़ों, दलित और अल्पसंख्यकों के प्रति भाजपा का रवैया द्वेषपूर्ण हैं इनकी छात्रवृत्ति बंद हो गई और फीस की क्षतिपूर्ति भी नहीं हो रही है। किसान की आर्थिक स्थिति खराब होती जा रही है। उनको कम्पनी व्यवस्था से भारी खतरा है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार ने मंहगाई बढ़ाई है। सामाजिक सद्भाव की जगह समाज में विभाजन की खाईं चैड़ी की है। विकास अवरूद्ध है। बुनियादी सुविधाएं बाधित हैं। सड़क, बिजली नहीं तो नए उद्योग कहां लगेंगे? आरक्षण समाप्त करने की साजिशे हो रही हैं। पंचायतों में आरक्षण खतरे में है। विधान सभा और विधान परिषद के अधिवेशन में भाजपा ने अपनी तानाशाही से लोकतांतिक व्यवस्था की गरिमा गिराने का काम किया।

श्री यादव ने विधायकों और पार्टी नेताओं से कहा कि गांव-गांव में चौपाल लगाकर समाजवादी सरकार की उपलब्धियों के बारे में लोगों को बताया जाना जारी रखे। कार्यकर्ता अपने बीच जिम्मेदारियां बांटकर जनता से संवाद स्थापित करें।

अखिलेश जी का दिया लैपटाप पाकर मेधावी गदगद

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने यूपी बोर्ड की हाईस्कूल और इण्टरमीडियट की परीक्षा में शीर्ष रैंक प्राप्त ५०-५० मेधावी छात्र-छात्राओं को लैपटाप देने का जो वादा किया गया था उसे निभाया गया है। उसी घोषणा के फलस्वरूप समाजवादी पार्टी की ओर से २४ अगस्त २०२० से श्रेष्ठता प्राप्त ९६ छात्र-छात्राओं को लैपटाप बांटे गए।

श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर सपा के जिलाध्यक्षों, सदस्य विधान सभा एवं सदस्य विधान परिषद आदि के द्वारा श्रेष्ठता प्राप्त छात्रों-छात्राओं के निवास तक जाकर लैपटाप दिए गए हैं। साथ ही मेधावी छात्र-छात्राओं के माता-पिता को भी सम्मानित किया गया है।

इण्टरमीडियट परीक्षा २०२० में २२वीं रैंक प्राप्त तक के ५० की सूची में ४७छात्रों को लैपटाप दिये गये, जिनमें जनपद बागपत, उन्नाव, फतेहपुर, के चार-चार, लखनऊ व कानपुर नगर के तीन-तीन, प्रयागराज, औरैया, सुल्तानपुर, लखीमपुर, वाराणसी, बरेली, मऊ, तथा अमरोहा के दो-दो तथा कौशाम्बी, एटा, चन्दौली, रायबरेली, कानपुर देहात, आगरा, गाजीपुर, कन्नौज, महराजगंज, सीतापुर, चन्दौली, हाथरस व जौनपुर के एक-एक छात्र को लैपटाप दिये गये है, जिनमें बागपत के छात्र अनुराग मलिक को प्रथम रैंक, प्रयागराज के प्रांजल सिंह पटेल को द्वितीय रैंक, औरैया के उत्कर्ष शुक्ला को तीसरी रैंक, उन्नाव के वैभव द्विवेदी को चौथी रैंक, सुल्तानपुर की आकांक्षा सिंह को पांचवी रैंक, बागपत की ही सीमा कौशिक को ६वीं रैंक प्राप्त छात्र-छात्राएं शामिल है।

इसी प्रकार हाईस्कूल बोर्ड परीक्षा २०२० में ५० उच्च रैंक प्राप्त छात्रों में से ४९ को लैपटाप देकर उनके माता-पिता के साथ

यशस्वी भवः

आह्वान

उनको सम्मानित किया गया। जनपद बागपत की प्रथम रैंक प्राप्त रिया जैन, बाराबंकी के द्वितीय रैंक प्राप्त अभिमन्यु वर्मा, बाराबंकी के ही तीसरी रैंक प्राप्त योगेश प्रताप सिंह, मुरादाबाद के चैथी रैंक प्राप्त गौरव सैनी, बाराबंकी के ही पांचवी रैंक प्राप्त निलीश कुमार गुप्ता तथा बागपत के ही ६वीं रैंक प्राप्त उज्जवल तोमर शामिल है। जनपद आजमगढ़ में श्रेष्ठता प्राप्त रैंक वाले छात्र-छात्राओं को लैपटाप शीघ्र वितरित किये जायेंगे।

श्री अखिलेश यादव ने हाईस्कूल-इण्टरमीडियट बोर्ड की परीक्षा २०२० में श्रेष्ठता प्राप्त रैंक वाले छात्र-छात्राओं को लैपटाप मिलने पर बधाई देते हुए उनके

भाजपा का वादा

भारतीय जनता पार्टी ने युवाओं को लैपटाप देने का जो वादा 2017 के विधानसभा चुनाव संकल्प पत्र में किया था वह हवा-हवाई ही साबित हुआ है। जबकि उसकी सरकार को साढ़े तीन साल हो चुके हैं। आज तक भाजपा सरकार ने अपना वादा पूरा नहीं किया।

जब अभी तक भाजपा को अपने वादे याद नहीं आए तो अगले कुछ दिनों में वह क्या कर पाएगी? वादा खिलाफी भ्रष्टाचार की गिनती में आता है। जनता हर वादे की भाजपा से जवाबदेही लेगी।

उल्लेखनीय है कि चुनावी वादे में उसने कहा था कालेज में दाखिला लेने पर प्रदेश के सभी युवाओं को बिना जाति और धर्म के भेदभाव के मुफ्त लैपटाप दिया जाएगा। राज्य के सभी युवाओं को कालेज में दाखिला लेने पर स्वामी विवेकानन्द युवा इंटरनेट

समाजवादी कुटिया के बच्चों को बैग और कॉपी-किताब

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने जनपद जौनपुर के मोहउद्दीपुर गांव में संचालित समाजवादी कुटिया में पढ़ने वाले बच्चों के लिए बैग, किताब-कॉपी, थर्मस बोतल तथा आर्थिक सहायता देकर अपना पिछले दिनों किया गया वादा निभा दिया।

पार्टी कार्यकर्ताओं से वीडियोकांफ्रेंसिंग के जरिए वार्ताक्रम में श्री यादव ने श्री ऋषि यादव द्वारा संचालित समाजवादी कुटिया में पढ़ने वाले बच्चों से भी बात की थी और बच्चों को पठन-पाठन की सामग्री देने के साथ उनसे मिलने आने का भी वादा किया था।

श्री ऋषि यादव ने कोरोना लॉकडाउन के पहले दिन से गांव के बच्चों को फल, दूध बांटने के साथ शिक्षा देने का काम शुरू किया था। उनके इस काम की श्री अखिलेश यादव ने सराहना की थी। उन्होंने दो बार व्यक्तिगत रूप से फोन कर बच्चों का हाल जाना था।

श्री अखिलेश यादव ने बच्चों से किए गए वादे को निभाते हुए जो बैग, किताब-कॉपी, थर्मस बोतल भेजी हैं, उस सामग्री पर श्री ऋषि यादव ने "सपा का काम जनता के नाम" के स्टिकर लगाकर वितरित किया।

उज्जवल भविष्य की कामना की है। श्री यादव ने उम्मीद जताई है कि वे लैपटाप के जरिए देश-दुनिया की नई जानकारियां हासिल कर सकेंगे और अपनी प्रगति के नए रास्ते खोजने में सफल होंगे।

गौरतलब है कि समाजवादी सरकार के कार्यकाल में छात्र-छात्राओं और युवाओं की बेहतरी के लिए अनेक कदम उठाए गए थे। छात्राओं को पढ़ाई में सुविधा के लिए जहां कन्या विद्याधन दिया गया था वहीं मेधावी छात्र-छात्राओं को १८ लाख लैपटाप दिए गए थे। ये लैपटाप अभी तक भी प्रयोग में हैं। नौजवानों के लिए समाजवादी स्वरोजगार योजना तथा कौशल विकास प्रशिक्षण जैसी तमाम योजनाएं लागू की गई थीं।

हवा-हवाई

योजना के अंतर्गत प्रतिमाह 1 जीबी इंटरनेट मुफ्त देने का भी वादा अपने कथित लोक कल्याण संकल्प पत्र 2017 में किया था। भाजपा ने सभी कालेजो, विश्वविद्यालयों में मुफ्त वाईफाई सुविधा देने का भी वादा किया था।

दरअसल, भाजपा धोखाधड़ी की राजनीति करती है। उसके झांसे में अब कोई आने वाला नहीं है। युवा पीढ़ी को तो सबसे ज्यादा नुकसान भाजपा राज में ही हुआ है। उनका भविष्य अंधकार में है। वैसे भी अब तो भाजपा सरकार के कार्यकाल में अब थोड़ा ही वक्त बचा है।

साफ़ और बेबाक

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Socialist Leader of India. Chief Minister of UP (2012 - 2017)

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

चुनावी रैली के लिए लाखों LED TV लगवाकर अरबों का प्रचार फ़ंड खर्च करनेवाली वर्तमान सत्ता के पास क्या शिक्षार्थियों-शिक्षकों के लिए ऑनलाइन शिक्षण के लिए व्यवस्था करने का फ़ंड नहीं है. भाजपा सरकार ईमानदारी से पीएम केयर्स फ़ंड को जनता केयर्स फ़ंड बनाए और देश के भविष्य की चिंता करे.

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

जब जवान भी ख़िलाफ़, किसान भी ख़िलाफ
तब समझो दंभी सत्ता के दिन अब बचे हैं चार

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Today in the parliament office

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

आज देश के हमारे अपने किसानों के साथ हर नागरिक को खड़ा होना होगा. भाजपा सरकार एमएसपी व मंडी के नाम पर सारा ध्यान फ़सल की ख़रीद-फ़रोख़्त में लगा देना चाहती है, जबकि भाजपा का असली उद्देश्य कृषि भूमि पर अप्रत्यक्ष क़ब्ज़ा करना है.

Following

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

हाथरस की बेटी बलात्कार-हत्याकांड' में शासन के दबाव में, परिवार की अनुमति बिना, रात्रि में पुलिस द्वारा अंतिम संस्कार करवाना, संस्कारों के विरुद्ध है. ये सबूतों को मिटाने का घोर निंदनीय कृत्य है.

भाजपा सरकार ने ऐसा करके पाप भी किया है और अपराध भी.

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

ऐसा लगता है कि भाजपा सरकार महिला सुरक्षा के विषय पर बेहद ग़ैर ज़िम्मेदाराना रवैया अपना रही है. इसीलिए सपा सरकार की 1090 जैसी योजनाओं को ख़त्म कर दिया है और 181 जैसी सेवाओं को ख़त्म कर रही है. 181 से जुड़ी कर्मचारियों को वेतन न देकर वो उन्हें आत्महत्या पर मजबूर कर रही है.

दुखद!

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

प्रदेश के युवाओं के आंदोलन व सरकारी अधिकारियों-कर्मचारियों की सुलगती नाराज़गी के दबाव में भाजपा सरकार संविदा व 50 साल सेवानिवृत्ति के मामले में हारकर पीछे हटी है व पराजय छुपाने के लिए विपक्ष पर राजनीति करने का बहाना बना रही है.

न चली तानाशाही, न चलेगी बहानाशाही.

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

भाजपा ने राज्यसभा व विधान परिषद में बिना बहुमत, ध्वनिमत के झूठ से बिल पास करवाकर लोकतंत्र की हत्या की है. किसान की ज़मीन-फ़सल पर आँख गड़ाए बैठे भाजपाई भले छल कर लें लेकिन किसान और नौजवान अब गाँव-सड़क पर 'भाजपा-बहिष्कार' का मन बना चुके हैं, जो आज सपा के तहसील स्तरीय धरने मे दिखा.

Translate Tweet

पंजीकृत डाक पंजीकरण संख्या LW/NP-300/2018-2020

सपा की राह
तरक्की की राह

समाजवादी पार्टी

www.samajwadiparty.in